International Journal of Science and Social Science Research [IJSSSR] ISSN: 2583-7877

भारत के ग्रामीण समाज पर प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन

पूनम गंगवार[1], डॉ0 कनक लता सिंह[2]

[1]शोधार्थी समाजशास्त्र, साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, इंडिया

[2]प्रोफेसर, साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, इंडिया

Corresponding Author Email: poonamgangwar1992@gmail.com

शोधसार—समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, उज्ज्वला योजना केवल आर्थिक सहायता ही नहीं है बल्कि महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण का भी एक माध्यम है। समाजशास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार, ऊर्जा की उपलब्धता जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाती है और ग्रामीण समाज में महिलाओं की पारिवारिक भूमिकाओं पर सकारात्मक प्रभाव डालती है (सिंह एवं डे, 2020)[1]।

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का संकल्प ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ और सुरक्षित ईंधन उपलब्ध कराना है, जिससे उनकी जीवनशैली में सुधार हो सके। इस योजना की शुरुआत 2016 में की गई थी, और इसका मुख्य लक्ष्य ग्रामीण महिलाओं को चूल्हे के धुएं से होने वाले स्वास्थ्य जोखिमों से बचाना है। चूल्हे के धुएं के कारण अनेक स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न होती हैं, विशेषकर महिलाओं और बच्चों में। इसलिए, यह योजना समाज के कमजोर वर्गों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस शोध का उद्देश्य उज्ज्वला योजना के प्रभावों का गहन समाजशास्त्रीय अध्ययन करना है, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि यह योजना ग्रामीण समाज, विशेष रूप से महिलाओं और उनके परिवारों पर कैसे सकारात्मक प्रभाव डाल रही है।

शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि उज्ज्वला योजना ने महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार किया है। चूल्हे के धुएँ से होने वाली बीमारियों, जैसे श्वसन रोग, में कमी आई है। इससे महिलाओं का स्वास्थ्य बेहतर हुआ है और वे अधिक सक्रियता से अन्य गतिविधियों में भाग लेने लगी हैं। महिलाओं की इस सक्रियता से उनकी सामाजिक स्थिति में भी सुधार हुआ है, जिससे परिवार और समाज में उनकी भूमिका मजबूत हुई है। आर्थिक दृष्टिकोण से, यह योजना रोजगार के नए अवसर पैदा करने में भी सफल रही है। स्थानीय स्तर पर स्वच्छ ईंधन के उपयोग से विभिन्न छोटे उद्योगों और व्यापारों को बढ़ावा मिला है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत हुई है। यह योजना न केवल आर्थिक विकास को बढ़ावा देती है, बल्कि महिलाओं के लिए आर्थिक स्वतंत्रता का भी माध्यम बनती है।

पर्यावरणीय दृष्टिकोण से भी उज्ज्वला योजना के सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। इस योजना के चलते जलाऊ लकड़ी की खपत में कमी आई है। इसके अलावा, प्रदूषण स्तर में गिरावट आई है, जो ग्रामीण पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार लाने में सहायक है। हालांकि, इस योजना के कार्यान्वयन में कुछ चुनौतियाँ जैसे लाभार्थियों द्वारा गैस सिलेंडर रिफिल करने में कठिनाइयाँ और कुछ स्थानों पर स्वच्छ ईंधन की पहुँच में बाधाएँ शामिल हैं। अंततः, इस अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना ने ग्रामीण समाज में सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय सुधारों का एक महत्वपूर्ण स्रोत प्रस्तुत किया है। इस प्रकार, उज्ज्वला योजना न केवल महिलाओं के स्वास्थ्य और कल्याण को प्रभावित करती है, बल्कि समग्र ग्रामीण विकास में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

I. परिचय

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण परिवारों, विशेष रूप से आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की महिलाओं को रसोई गैस एलपीजी के माध्यम से स्वच्छ और सुरक्षित ईंधन उपलब्ध कराना है। 2016 में शुरू की गई इस योजना के तहत, पांच करोड़ से अधिक गरीब परिवारों को निःशुल्क एलपीजी कनेक्शन दिए गए हैं। योजना के तहत विशेष रूप से महिलाओं को नामांकित किया गया है, जिससे महिलाओं के जीवन में स्वच्छता और सुविधा का स्तर बढ़ सके (कुमार, 2019)[2]।

[1] (सिंह एवं डे, 2020)
[2] (कुमार, 2019)

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना की शुरुआत भारत सरकार द्वारा 1 मई 2016 को की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य भारत के ग्रामीण एवं निम्न–आय वर्ग के परिवारों को स्वच्छ ईंधन, विशेष रूप से एलपीजी कनेक्शन प्रदान करना था, जिससे रसोई में लकड़ी, कोयला और गोबर के उपले जैसे पारंपरिक ईंधनों का उपयोग कम किया जा सके। इन पारंपरिक ईंधनों के जलने से रसोई में अत्यधिक धुआं उत्पन्न होता है, जो महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालता है (पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय, 2018)[3]।

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना ग्रामीण समाज में कई मायनों में महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है। यह योजना ग्रामीण भारत में महिलाओं के स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालने के साथ ही उनके जीवन स्तर को सुधारने में सहायक रही है। धुएं से होने वाले श्वसन संबंधी रोगों में कमी आई है, और घरों में स्वच्छता के स्तर में सुधार हुआ है। इस योजना ने महिलाओं को रसोई के धुएं से निजात दिलाने का कार्य किया है, जिससे वे अन्य सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों में भी हिस्सा ले सकती हैं (शर्मा एवं वर्मा, 2021)[4]।

II. शोध की समीक्षा और सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

योजना से न केवल ग्रामीण महिलाओं को रसोई में समय की बचत हुई है, बल्कि इससे वे अन्य सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों में भी हिस्सा लेने के लिए प्रेरित हुई हैं, जो उनके आत्मविश्वास और सामाजिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सहायक है। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना पर विभिन्न शोधकर्ताओं ने इसके प्रभावों का गहन अध्ययन किया है। इनमें से अधिकांश शोधों का निष्कर्ष यह है कि इस योजना ने महिलाओं के स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सकारात्मक बदलाव किए हैं।

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय (2018)[5] के अनुसार, योजना ने महिलाओं के लिए स्वच्छ ऊर्जा की पहुँच सुनिश्चित की है और उनके घरेलू कार्यों में सुविधा प्रदान की है। मिश्रा एवं शर्मा (2019)[6] के अनुसार, एलपीजी कनेक्शन ने धुएं से होने वाले फेफड़ों के संक्रमण और श्वसन संबंधी रोगों में कमी लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह योजना विशेष रूप से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़े वर्गों के परिवारों को लक्षित करती है, जिससे समाज के हाशिए पर रहने वाले वर्गों को मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया गया है (भारत सरकार, 2016)[7]।

शर्मा एवं वर्मा (2021)[8] के अनुसार, एलपीजी का उपयोग पेड़ों की कटाई में कमी लाने में सहायक सिद्ध हुआ है, जिससे वनों का संरक्षण हो रहा है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (2017)[9] के अनुसार, धुएं से होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं के चलते हर साल कई महिलाएं गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करती हैं।

चौहान (2019)[10] के अनुसार, पुरुष सदस्यों के मुकाबले महिलाओं पर इन बीमारियों का अधिक प्रभाव पाया गया है, क्योंकि वे दिन के अधिकतर समय रसोई में बिताती हैं। उज्ज्वला योजना के माध्यम से रसोई में प्रदूषण और स्वास्थ्य जोखिमों में कमी आई है।

अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण से भी उज्ज्वला योजना का लाभ देखा जा सकता है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में ईंधन के आयात पर निर्भरता कम हुई है, और इससे जुड़े छोटे व्यवसायों को भी बढ़ावा मिला है। यह योजना ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने और उनके स्वास्थ्य और शिक्षा में सुधार के लिए लंबी अवधि में महत्वपूर्ण प्रभाव डाल रही है (जोशी एवं सिंह, 2019)[11]।

इस प्रकार, उज्ज्वला योजना न केवल ग्रामीण महिलाओं के जीवन में सुधार लाने का एक साधन है, बल्कि ग्रामीण समाज के संपूर्ण विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इससे न केवल स्वास्थ्य और पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है बल्कि समाज के वंचित वर्गों को समानता और न्याय का अवसर भी मिला है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह योजना ग्रामीण समाज के विभिन्न पहलुओं में सुधार लाने और एक बेहतर समाज की स्थापना में सहायक सिद्ध हो रही है।

III. अध्ययन का उद्देश्य

[3] (पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय, 2018)
[4] (शर्मा एवं वर्मा, 2021)
[5] पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय (2018)
[6] मिश्रा एवं शर्मा (2019)
[7] (भारत सरकार, 2016)
[8] शर्मा एवं वर्मा (2021)
[9] विश्व स्वास्थ्य संगठन (2017)
[10] चौहान (2019)
[11] (जोशी एवं सिंह, 2019)

इस अध्ययन का उद्देश्य उज्ज्वला योजना के ग्रामीण समाज पर सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी प्रभावों का विश्लेषण करना है। यह योजना न केवल महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार लाती है, बल्कि उनके सामाजिक सशक्तिकरण का माध्यम भी बनती है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, यह अध्ययन यह समझने में सहायक होगा कि कैसे सरकार की इस योजना ने ग्रामीण समाज की जीवनशैली और सोच में बदलाव लाने का कार्य किया है (पटेल, 2019)[12]।

इस अध्ययन से नीति–निर्माताओं को ग्रामीण क्षेत्रों में इस प्रकार की योजनाओं के कार्यान्वयन में आने वाली समस्याओं और उनके समाधान के लिए मार्गदर्शन मिलेगा। इस शोध का उद्देश्य योजना के स्वास्थ्य, सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभावों का मूल्यांकन करना है। विशेष रूप से, ग्रामीण महिलाओं और कमजोर सामाजिक समूहों पर योजना के प्रभाव का अध्ययन करना इस शोध का मुख्य दायरा है। इस प्रकार, यह अध्ययन विभिन्न सामाजिक दृष्टिकोणों से उज्ज्वला योजना के प्रभाव का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है (गुप्ता एवं कुमार, 2020)[13]।

IV. शोध पद्धति

यह अध्ययन एक गुणात्मक और मात्रात्मक शोध विधियों का मिश्रण है, जिसमें प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का ग्रामीण समाज पर प्रभाव विश्लेषित किया गया है।

V. तथ्य संकलन

तथ्य–संग्रह के लिए सर्वेक्षण, साक्षात्कार और क्षेत्रीय अध्ययन का उपयोग किया गया है। सर्वेक्षण में प्रश्नावली का उपयोग किया गया, जिसमें महिलाओं के स्वास्थ्य, घरेलू कार्यों में समय की बचत, सामाजिक स्थिति में बदलाव और आर्थिक लाभों से जुड़े प्रश्न शामिल थे। साक्षात्कार के माध्यम से स्थानीय ग्रामीण महिलाओं, साथ ही पंचायत सदस्यों और सरकारी अधिकारियों से गहन जानकारी एकत्र की गई। इसके अलावा, क्षेत्रीय अध्ययन के तहत चुने गए गांवों में जाकर प्रत्यक्ष अवलोकन के माध्यम से विभिन्न कारकों का अध्ययन किया गया। इससे तथ्यों की सत्यता और विश्वसनीयता सुनिश्चित की गई (सिंह, 2019)[14]।

सैम्पल चयन में प्रयुक्त गाँव और परिवारों का चयन यादृच्छिक (रैंडम) प्रक्रिया से किया गया, जिससे ग्रामीण समाज का व्यापक और संतुलित प्रतिनिधित्व हो सके। अध्ययन के लिए उत्तर प्रदेश के रामपुर जनपद की दो तहसीलों को अपने अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित किया गया। इन तहसीलों की समस्त उज्ज्वला योजना की लाभार्थी महिलाओं का गहन अध्ययन दुर्लभ होने के कारण शोधार्थिनी द्वारा उद्देश्यपूर्ण निर्देशन के आधार पर 500 ग्रामीण महिलाओं का चुनाव किया गया। गाँवों का चयन किया गया, जिनमें मुख्यतः उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों के ग्रामीण क्षेत्रों को शामिल किया गया।

VI. प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का ग्रामीण समाज में प्रवेश

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचार–प्रसार बड़े पैमाने पर किया गया है, जिसमें विशेष रूप से महिलाओं को लक्षित किया गया है। इस योजना के प्रचार में केंद्र सरकार और राज्य सरकारों ने विभिन्न माध्यमों का उपयोग किया, जैसे कि आकाशवाणी, दूरदर्शन, पंचायतों में विशेष सभाएँ और स्थानीय सरकारी कार्यक्रम। इसके अलावा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कई जनसभाओं में योजना के लाभों पर चर्चा की, जिससे जनता में योजना के प्रति जागरूकता बढ़ी (शर्मा, 2019 एवं गुप्ता, 2021)[15]।

स्वयं सहायता समूहों और आशा कार्यकर्ताओं की मदद से ग्रामीण समाज की महिलाओं तक इस योजना की जानकारी पहुँचाने का प्रयास किया गया, ताकि उन्हें एलपीजी गैस के उपयोग और इसके स्वास्थ्य संबंधी लाभों के बारे में समझाया जा सके।

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का उद्देश्य मुख्य रूप से गरीबी रेखा से नीचे के परिवारों की महिलाओं को एलपीजी कनेक्शन प्रदान करना है। इस योजना के लाभार्थी वे परिवार हैं जो सामाजिक–आर्थिक जाति जनगणना 2011 के अंतर्गत सूचीबद्ध हैं। लाभार्थियों में विशेष रूप से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अति पिछड़े वर्ग और प्रधानमंत्री आवास योजना के लाभार्थियों को प्राथमिकता दी गई। पात्रता के तहत महिला लाभार्थी की आयु कम से कम 18 वर्ष होनी चाहिए, और परिवार के पास पहले से कोई एलपीजी कनेक्शन नहीं होना चाहिए (गुप्ता, 2021 एव चौधरी, 2022)[16]।

[12] (पटेल, 2019)
[13] (गुप्ता एवं कुमार, 2020)
[14] (सिंह, 2019)
[15] (शर्मा, 2019 एवं गुप्ता, 2021)
[16] (गुप्ता, 2021 एव चौधरी, 2022)

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का उद्देश्य न केवल एलपीजी कनेक्शन देना है बल्कि ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार करना भी है। लकड़ी, गोबर के उपले, और अन्य पारंपरिक ईंधनों के उपयोग से उत्पन्न होने वाले धुएं से महिलाओं को सांस संबंधी बीमारियों का खतरा अधिक होता है। उज्ज्वला योजना ने इस समस्या का समाधान करने का प्रयास किया है। इस योजना के तहत लाभार्थियों को एक एलपीजी कनेक्शन के साथ–साथ सिलेंडर और चूल्हा सब्सिडी भी प्रदान की जाती है, जिससे पहली बार एलपीजी उपयोग की लागत कम हो जाती है। इसके अलावा, एलपीजी सिलेंडर की भराई पर भी सब्सिडी प्रदान की जाती है ताकि गरीब परिवार इस सुविधा का निरंतर उपयोग कर सकें (सिंह, 2020 एव कुमार, 2019)[17]।

उज्ज्वला योजना ने ग्रामीण महिलाओं के जीवन में एक सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास किया है। इस योजना ने उन्हें एक स्वस्थ पर्यावरण में खाना पकाने की सुविधा दी है, जिससे न केवल महिलाओं का स्वास्थ्य सुधरा है बल्कि बच्चों और परिवार के अन्य सदस्यों के स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इसके अलावा, समय की बचत ने महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्रिय होने का अवसर भी दिया है। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना ग्रामीण समाज में सामाजिक और स्वास्थ्य संबंधी सुधारों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो रही है (चौधरी, 2022 एव मिश्रा, 2020)[18]।

VII. प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजनाः ग्रामीण महिलाओं और परिवार के स्वास्थ्य पर प्रभाव

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ ईंधन के रूप में एलपीजी कनेक्शन प्रदान किए जाने के कारण पारंपरिक चूल्हे के धुएँ से होने वाली बीमारियों में उल्लेखनीय कमी देखी गई है। गोबर के उपले और लकड़ी जैसे पारंपरिक ईंधनों का उपयोग करने से घरों में धुएँ की मात्रा अधिक होती है, जिससे विशेषकर महिलाओं को सांस की बीमारियों, आँखों की जलन, और फेफड़ों के संक्रमण का खतरा रहता है (गुप्ता, 2020 एव शर्मा, 2018)[19]।

परंपरागत ईंधन के धुएँ में निरंतर रहने से महिलाओं को गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता था, जैसे कि क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (ब्व्व्) और अस्थमा। उज्ज्वला योजना के अंतर्गत एलपीजी के उपयोग से महिलाओं को धुएँ के संपर्क से मुक्त किया गया है, जिससे उनके शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार हुआ है (कुमार, 2019 एव सिंह, 2021)[20]।

इसके अतिरिक्त, धुएँ में कमी के कारण महिलाओं का मानसिक स्वास्थ्य भी बेहतर हुआ है क्योंकि अब वे घर के कार्यों में अधिक स्वस्थ और सुरक्षित महसूस करती हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार, योजना से लाभान्वित 85: महिलाओं ने अपने स्वास्थ्य में सुधार महसूस किया है (सिंह, 2021 एव दुबे, 2020)[21]।

महिलाओं के साथ–साथ बच्चों पर भी इस योजना का सकारात्मक प्रभाव देखा गया है। पारंपरिक चूल्हे से निकलने वाला धुआँ छोटे बच्चों के स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव डालता था। धुएँ के निरंतर संपर्क में रहने से बच्चों को अस्थमा और श्वसन संबंधी समस्याएँ होने की संभावना अधिक होती है (शर्मा, 2018)[22]।

एलपीजी के उपयोग से न केवल बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार हुआ है बल्कि वे घर के अंदर स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण में रह सकते हैं, जिससे उनके शारीरिक और मानसिक विकास में भी मदद मिलती है। उज्ज्वला योजना के लागू होने से ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। धुएँ से होने वाली बीमारियों में कमी के कारण प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर सांस संबंधी रोगों के मामलों में कमी आई है। इस योजना से पहले ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर स्वास्थ्य सेवाएँ सांस संबंधी बीमारियों के इलाज में जुटी रहती थीं, जिससे अन्य स्वास्थ्य सेवाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता था (दास, 2019 एव नारायण, 2020)[23]।

अब स्वास्थ्य सेवाओं पर कम भार पड़ने के कारण संसाधनों का बेहतर उपयोग हो पा रहा है और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता भी बढ़ी है। इस प्रकार, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना ने न केवल महिलाओं बल्कि संपूर्ण परिवार के स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। इसके चलते न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य में सुधार हुआ है, बल्कि समाज के समग्र स्वास्थ्य पर भी इसका सकारात्मक असर पड़ा है, जो समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता को सुधारने में सहायक है (नारायण, 2020 एव गुप्ता, 2020)[24]।

---

[17] (सिंह, 2020 एव कुमार, 2019)
[18] (चौधरी, 2022 एव मिश्रा, 2020)
[19] (गुप्ता, 2020 एव शर्मा, 2018)
[20] (कुमार, 2019 एव सिंह, 2021)
[21] (सिंह, 2021 एव दुबे, 2020)
[22] (शर्मा, 2018)
[23] (दास, 2019 एव नारायण, 2020)
[24] (नारायण, 2020 एव गुप्ता, 2020)

VIII. प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना से ग्रामीण जीवनशैली और दैनिक गतिविधियों में परिवर्तन

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना ने ग्रामीण महिलाओं की दिनचर्या में बड़ा बदलाव लाया है। लकड़ी, गोबर के उपले, और कोयले जैसे पारंपरिक ईंधनों के उपयोग के स्थान पर रसोई गैस के उपयोग ने महिलाओं के लिए समय की बचत सुनिश्चित की है। पहले, महिलाओं को भोजन पकाने के लिए ईंधन की तलाश में लंबे समय तक जंगलों में लकड़ी इकट्ठा करने के लिए जाना पड़ता था, जो न केवल समय–साध्य था बल्कि शारीरिक थकावट भी बढ़ाता था (शुक्ला, 2019)[25]।

उज्ज्वला योजना से रसोई गैस उपलब्ध होने के कारण, इस कार्य में लगने वाले समय में कमी आई है, जिससे महिलाएँ अपने समय का बेहतर उपयोग अन्य गतिविधियों में कर पा रही हैं। समय की बचत के चलते महिलाएँ अब शिक्षा, स्वास्थ्य, और कृषि से जुड़ी गतिविधियों में अधिक सहभागिता दिखा रही हैं। पहले घर की रसोई के काम में अधिकतर समय खर्च होने के कारण महिलाएँ शिक्षा और रोजगार में कम सक्रिय हो पाती थीं। उज्ज्वला योजना से मिली राहत के चलते महिलाएँ स्वयं–सहायता समूहों में जुड़कर सामुदायिक कार्यों और आर्थिक गतिविधियों में भी अधिक संलग्न हो रही हैं (दुबे, 2020)[26]।

यह बदलाव समाज में महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। रसोई गैस के उपयोग ने भोजन पकाने की प्रक्रिया को न केवल सरल और तेज बना दिया है, बल्कि महिलाओं के स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाया है। पहले पारंपरिक ईंधनों के उपयोग से बनने वाले धुएँ में भोजन पकाने के कारण महिलाओं को श्वास संबंधी बीमारियों का खतरा बना रहता था। अब, एलपीजी गैस के इस्तेमाल से यह समस्या काफी हद तक दूर हुई है, जिससे महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार हुआ है (गुप्ता, 2021)[27]।

साथ ही, भोजन पकाने की प्रक्रिया आसान होने से महिलाओं में भोजन की गुणवत्ता और पौष्टिकता को लेकर अधिक जागरूकता भी बढ़ी है। रसोई गैस की सहज उपलब्धता ने ग्रामीण जीवनशैली पर गहरा प्रभाव डाला है। भोजन पकाने का काम अब आसानी से और कम समय में हो जाने से महिलाएँ परिवार के साथ अधिक समय बिता पा रही हैं और बच्चों की पढ़ाई और उनके विकास पर ध्यान केंद्रित कर पा रही हैं। इससे ग्रामीण समाज में महिलाओं की जीवनशैली अधिक व्यवस्थित और संतुलित हुई है (शर्मा, 2018)[28]।

इसके अतिरिक्त महिलाएँ स्वयं को अधिक सुरक्षित महसूस करती हैं क्योंकि उन्हें अब जंगलों में जाकर ईंधन ढूंढने की आवश्यकता नहीं होती, जिससे उनके शारीरिक सुरक्षा का स्तर भी बढ़ा है। इस प्रकार, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना ने न केवल महिलाओं की दैनिक गतिविधियों में बदलाव लाया है, बल्कि उनके जीवनस्तर और समाज में उनकी स्थिति को भी बेहतर किया है। समय की बचत, स्वास्थ्य में सुधार, और नई गतिविधियों में सहभागिता ने महिलाओं की आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया है, जो ग्रामीण समाज के विकास में सहायक सिद्ध हो रहा है (मिश्रा, 2020)[29]।

IX. सामाजिक और आर्थिक प्रभाव

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का ग्रामीण क्षेत्रों की स्थानीय अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। योजना के तहत गैस सिलेंडर की डिलीवरी और सप्लाई चेन के प्रबंधन के लिए बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर उत्पन्न हुए हैं, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में। कई स्थानीय लोगों को इस योजना के तहत एजेंसी संचालन, डिलीवरी, और सपोर्ट सेवाओं में रोजगार मिला है, जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई है (त्रिपाठी, 2021)[30]।

इस तरह, उज्ज्वला योजना ने न केवल ऊर्जा के स्रोत की उपलब्धता में वृद्धि की है बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूत किया है। महिलाओं को रसोई गैस की सुविधा प्रदान करके उनके घरेलू जीवन को सरल बनाया गया है, जिससे उन्हें शारीरिक और मानसिक राहत मिली है। चूल्हे के धुएँ में काम करने से होने वाली बीमारियों में कमी आने से महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार हुआ है, जिससे वे अधिक सशक्त महसूस कर रही हैं। इसके साथ ही, उज्ज्वला योजना के माध्यम से महिलाओं को स्वच्छ ऊर्जा तक पहुंच प्राप्त हुई है, जो उनके स्वास्थ्य और जीवनशैली में सुधार लाने के साथ–साथ उनके आत्म–सम्मान को भी बढ़ाती है (कुमार, 2019)[31]।

यह पहलू महिलाओं की समाज में भूमिका को बदलने और सशक्तिकरण के नए आयाम प्रदान करने में सहायक सिद्ध हो रहा है। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के जरिए ग्रामीण समाज में स्वच्छ ऊर्जा के महत्व और उससे जुड़े लाभों के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है। पहले ग्रामीण क्षेत्रों में लकड़ी, कोयला, और अन्य पारंपरिक ईंधनों का उपयोग होता था, जिससे पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता था और स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न होती थीं।

---

[25] (शुक्ला, 2019)
[26] (दुबे, 2020)
[27] (गुप्ता, 2021)
[28] (शर्मा, 2018)
[29] (मिश्रा, 2020)
[30] (त्रिपाठी, 2021)
[31] (कुमार, 2019)

उज्ज्वला योजना ने ग्रामीण स्तर पर एलपीजी गैस का उपयोग बढ़ाकर स्वच्छ ऊर्जा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इसके कारण पर्यावरण में सुधार हो रहा है और लोगों में स्वच्छ ऊर्जा के प्रति जागरूकता बढ़ी है (सिंह, 2020)[32]। इस योजना के जरिए स्वच्छ ऊर्जा को अपनाने से लोगों में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता भी आई है।

X. पर्यावरणीय प्रभाव

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना ने ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ ऊर्जा स्रोत के रूप में एलपीजी गैस उपलब्ध कराई है, जिससे लकड़ी और कोयले के पारंपरिक ईंधनों पर निर्भरता में कमी आई है। लकड़ी और कोयले से निकलने वाले धुएँ से उत्पन्न वायु प्रदूषण में कमी हुई है, जो वातावरण के साथ–साथ परिवारों के स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी है। स्वच्छ ऊर्जा का यह उपयोग प्रदूषण नियंत्रण के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो रहा है (पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय, 2018)[33]।

ग्रामीण समाज में पहले खाना पकाने के लिए मुख्यतः जलाऊ लकड़ी का प्रयोग किया जाता था, जिसके लिए बड़े पैमाने पर पेड़ों की कटाई होती थी। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत रसोई गैस के उपयोग से जलाऊ लकड़ी की मांग में कमी आई है, जिससे वन संपदा का संरक्षण संभव हो रहा है। जलाऊ लकड़ी की खपत में यह कमी वृक्षों की कटाई को रोकने में सहायक साबित हुई है और वनों के संरक्षण की दिशा में एक सकारात्मक प्रयास है (साहू एवं कर, 2020)[34]।

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा मिलने से पर्यावरण पर दीर्घकालिक सकारात्मक प्रभाव देखने को मिल रहा है। एलपीजी गैस का उपयोग न केवल धुआं रहित है बल्कि इसमें कार्बन का उत्सर्जन भी कम होता है, जिससे ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी आती है। इसके दीर्घकालिक प्रभाव के रूप में जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संतुलन को बनाए रखने में भी मदद मिल रही है (सिंह एवं सिंह, 2019)[35]।

इस प्रकार, उज्ज्वला योजना ने पर्यावरण सुरक्षा की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के कारण न केवल ग्रामीण समाज में प्रदूषण और वनों की कटाई में कमी आई है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण के प्रति एक नई जागरूकता भी विकसित हुई है, जो आने वाले समय में स्थायी विकास की नींव रखती है (मिश्रा एवं शर्मा, 2021)[36]।

XI. चुनौतियाँ और समस्याएँ

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के लाभकारी प्रभाव के बावजूद, इसके कार्यान्वयन में कुछ चुनौतियाँ सामने आई हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में योजना का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करना कठिन रहा है, खासकर दूर–दराज के गाँवों में जहाँ गैस सिलेंडर की नियमित आपूर्ति और वितरण में समस्याएँ आती हैं। भौगोलिक कारणों और कमजोर परिवहन व्यवस्था के चलते कुछ क्षेत्रों में एलपीजी सिलेंडर समय पर नहीं पहुँच पाते, जिससे योजना का पूर्ण लाभ नहीं मिल पाता हालांकि सरकार ने योजना के तहत मुफ्त एलपीजी कनेक्शन प्रदान किए हैं, लेकिन सिलेंडर की रिफिलिंग ग्रामीण परिवारों के लिए एक बड़ी चुनौती बनकर उभरी है। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण कई लाभार्थी नियमित रूप से सिलेंडर रिफिल नहीं करवा पाते हैं और पारंपरिक ईंधनों जैसे लकड़ी या कोयले पर निर्भर रहते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में एलपीजी की बढ़ती कीमतों ने भी सिलेंडर रिफिलिंग को महँगा बना दिया है, जिससे योजना का प्रभाव सीमित हो जाता है।

ग्रामीण समाज में स्वच्छ ऊर्जा और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का अभाव योजना की सफलता में एक और बाधा बनकर उभरा है। कई ग्रामीण परिवारों को यह जानकारी नहीं है कि लकड़ी और कोयले का धुआँ उनके स्वास्थ्य के लिए कितना हानिकारक है। इसके अतिरिक्त, कुछ लाभार्थियों में गैस सिलेंडर के सुरक्षित उपयोग की जानकारी का अभाव भी देखा गया है, जिससे दुर्घटनाओं का खतरा बढ़ जाता है। इस योजना के लाभों को सुदूर गाँवों में पहुँचाने के लिए जागरूकता बढ़ाने और स्थानीय स्तर पर प्रचार–प्रसार करने की आवश्यकता है। इन चुनौतियों के चलते उज्ज्वला योजना का प्रभाव पूर्णतः लाभकारी साबित नहीं हो पाया है। उचित आर्थिक सहायता, जागरूकता अभियानों, और नियमित आपूर्ति प्रबंधन के जरिए इन समस्याओं को दूर करना आवश्यक है ताकि योजना का अधिकतम लाभ ग्रामीण समाज तक पहुँच सके ।

XII. सुझाव

[32] (सिंह, 2020)
[33] (पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय, 2018)
[34] (साहू एवं कर, 2020)
[35] (सिंह एवं सिंह, 2019)
[36] (मिश्रा एवं शर्मा, 2021)

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना की पहुँच और प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं। सबसे पहले इस योजना के तहत वितरित एलपीजी सिलेंडरों की रिफिलिंग को आर्थिक रूप से सुलभ बनाना आवश्यक है, ताकि आर्थिक रूप से कमजोर परिवार भी नियमित रूप से इसका लाभ उठा सकें। गाँवों में अधिक जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को एलपीजी के उपयोग और इसके स्वास्थ्य लाभों के बारे में शिक्षित किया जा सकता है।

नीति निर्माताओं के लिए यह सुझाव है कि वे योजना के संचालन में अधिक निगरानी और पारदर्शिता को प्राथमिकता दें, ताकि सही लाभार्थियों तक इसका लाभ पहुँच सके। साथ ही, एलपीजी के वितरण नेटवर्क को मजबूत करने की आवश्यकता है, विशेषकर दूरस्थ और पिछड़े क्षेत्रों में। सामाजिक संगठनों और पंचायती राज संस्थाओं को भी इस योजना के प्रभाव को बढ़ाने में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। ये संस्थाएँ ग्रामीण स्तर पर जागरूकता बढ़ाने, प्रशिक्षण प्रदान करने, और योजनाओं की निगरानी में सहायता कर सकती हैं। इन संगठनों के माध्यम से समुदाय में स्वच्छ ऊर्जा के महत्व पर जोर देकर उज्ज्वला योजना के उद्देश्य को अधिक प्रभावी ढंग से प्राप्त किया जा सकता है।

XIII. निष्कर्ष

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना ने ग्रामीण समाज में एक महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन की नींव रखी है। इस योजना ने विशेष रूप से महिलाओं के जीवन में सुधार लाते हुए, ग्रामीण समाज की सामाजिक संरचना को नया आकार दिया है। उज्ज्वला योजना से न केवल स्वच्छ ईंधन की पहुंच में वृद्धि हुई है, बल्कि इससे महिलाओं का स्वास्थ्य भी बेहतर हुआ है, जो पहले चूल्हे के धुएँ से गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करती थीं। योजना के माध्यम से महिलाओं को समय की बचत होने के साथ–साथ, वे शिक्षा, रोजगार, और सामुदायिक गतिविधियों में अधिक सक्रिय रूप से भाग ले पा रही हैं, जिससे उनके सशक्तिकरण में वृद्धि हुई है। इस योजना ने सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहित करते हुए महिलाओं की भूमिका को पारिवारिक सीमाओं से बाहर विस्तारित करने का अवसर प्रदान किया है।

सामाजिक दृष्टिकोण से, उज्ज्वला योजना ने ग्रामीण समाज में जीवनस्तर में सुधार किया है, जिससे स्वास्थ्य सेवाओं पर भार कम हुआ है और आर्थिक बचत को बढ़ावा मिला है। इसके अलावा, सामाजिक स्तर पर स्वच्छ ऊर्जा के प्रति जागरूकता बढ़ी है, जिससे ग्रामीण समाज में दीर्घकालिक सकारात्मक बदलाव की संभावनाएँ बढ़ी हैं। इस प्रकार, उज्ज्वला योजना ने ग्रामीण समाज में एक स्थायी और रचनात्मक परिवर्तन की ओर कदम बढ़ाने का कार्य किया है।

इस अध्ययन में पाया गया कि उज्ज्वला योजना के लागू होने से इन बीमारियों में कमी आई है और महिलाओं को एक स्वस्थ वातावरण में खाना पकाने की सुविधा मिली है।

अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का ग्रामीण समाज में व्यापक सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस योजना ने ग्रामीण महिलाओं और परिवारों को पारंपरिक जलाऊ साधनों से होने वाले स्वास्थ्य जोखिमों से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लकड़ी और गोबर के चूल्हे के धुएँ से निकलने वाले हानिकारक तत्वों के कारण ग्रामीण समाज में श्वसन रोगों और आँखों की समस्याओं की दर बहुत अधिक थी। उज्ज्वला योजना के अंतर्गत एलपीजी सिलेंडर की पहुँच से इन समस्याओं में कमी आई है । और महिलाओं के स्वास्थ्य में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। इसके साथ ही, इस योजना ने ग्रामीण समाज में महिलाओं के सशक्तिकरण में भी योगदान दिया है। चूल्हे के धुएँ से निजात पाकर महिलाओं का समय और ऊर्जा बच रही है, जिससे वे अन्य आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों में सहभागिता कर पा रही हैं। इस योजना ने समय और संसाधनों की बचत के माध्यम से आर्थिक रूप से भी लाभ प्रदान किया है, जिससे परिवारों का जीवन स्तर बेहतर हुआ है।

पर्यावरणीय दृष्टिकोण से भी उज्ज्वला योजना का प्रभाव महत्वपूर्ण है। जलाऊ लकड़ी की खपत में कमी आने से जंगलों का संरक्षण संभव हुआ है और पर्यावरण पर दीर्घकालिक सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला है। स्वच्छ ऊर्जा के प्रति ग्रामीण समाज में जागरूकता बढ़ी है, जो टिकाऊ विकास के लक्ष्य की दिशा में एक कदम है। अतः यह कहा जा सकता है कि उज्ज्वला योजना ने ग्रामीण समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस योजना की सफलता से समाज के सामाजिक और आर्थिक ढांचे में सुधार हुआ है, जिससे स्वास्थ्य, पर्यावरण और सामाजिक संरचना के विभिन्न पहलुओं में लाभ हुआ है। उज्ज्वला योजना एक समग्र विकास का प्रतीक है जो भविष्य में भी ग्रामीण भारत के लिए स्थायी विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, एस., एवं डे, एस. (2020). प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का ग्रामीण परिवारों पर आर्थिक प्रभाव. सामाजिक और आर्थिक विकास जर्नल, 22(3), 453 470. https://doi.org/10.1007/s40847-020-00121-y
2. कुमार, आर. (2019). पर्यावरणीय सुधार और स्वच्छ ऊर्जा कार्यक्रमः उज्ज्वला योजना का विश्लेषण. इंडियन जर्नल ऑफ एनवायरनमेंट, 14(3), 125 133.
3. पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय. (2018). प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजनाः स्वच्छ ऊर्जा की दिशा में प्रगति. भारत सरकार. http://petroleum.nic.in

4. शर्मा, डी., एवं वर्मा, एम. (2021). स्वच्छ ईंधन अपनानाः स्वास्थ्य और सशक्तिकरण पर प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण. ऊर्जा नीति, 151, 112150. https://doi.org/10.1016/j.enpol.2020.112150
5. पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय. (2018). प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजनाः स्वच्छ ऊर्जा की दिशा में प्रगति. भारत सरकार. http://petroleum.nic.in
6. मिश्रा, ए., एवं शर्मा, पी. (2019). प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना और ग्रामीण स्वास्थ्यः एक मूल्यांकन. भारतीय सामाजिक विज्ञान समीक्षा, 21(4), 210 225.
7. भारत सरकार. (2016). प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजनाः योजना दस्तावेज. पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय. http://petroleum.nic.in
8. शर्मा, डी., एवं वर्मा, एम. (2021). स्वच्छ ईंधन अपनानाः स्वास्थ्य और सशक्तिकरण पर प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण. ऊर्जा नीति, 151, 112150. https://doi.org/10.1016/j.enpol.2020.112150
9. विश्व स्वास्थ्य संगठन. (2017). घरेलू वायु प्रदूषण और स्वास्थ्य. https://www.who.int/news-room/fact-sheets/detail/household-air-pollution-and-health
10. चौहान, एस. (2019). उज्ज्वला योजना और ग्रामीण महिलाओं का स्वास्थ्यः एक अध्ययन. सामाजिक परिवर्तन, 49(3), 377 389.
11. जोशी, आर., एवं सिंह, ए. (2019). ऊर्जा असमानता और महिला सशक्तिकरणः उज्ज्वला योजना का प्रभाव. ग्रामीण विकास जर्नल, 35(2), 89 102.
12. पटेल, एस. (2019). ग्रामीण महिलाओं के जीवन स्तर पर प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का प्रभाव. सामाजिक अनुसंधान जर्नल, 17(2), 145 156.
13. गुप्ता, ए., एवं कुमार, पी. (2020). ऊर्जा पहुंच और महिला सशक्तिकरणः प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का अध्ययन. भारत विकास समीक्षा, 12(1), 67 81. https://doi.org/10.1177/0972262920906239
14. सिंह, आर. (2019). ग्रामीण क्षेत्रों में ऊर्जा उपयोग और स्वास्थ्यः प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के प्रभाव. भारतीय जनसंख्या और विकास पत्रिका, 44(1), 89 102.
15. शर्मा, डी. (2019). प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का सामाजिक प्रभावः ग्रामीण दृष्टिकोण. भारतीय समाजशास्त्र जर्नल, 45(2), 210 224.
16. गुप्ता, ए. (2021). उज्ज्वला योजना और महिला सशक्तिकरणः एक अध्ययन. विकास नीति समीक्षा, 13(1), 77 89. https://doi.org/10.1177/0972262921992845
17. चौधरी, पी. (2022). ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ ऊर्जा की पहुंचः उज्ज्वला योजना का मूल्यांकन. ऊर्जा और पर्यावरण जर्नल, 16(3), 145 160.
18. सिंह, एस. (2020). प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का ग्रामीण स्वास्थ्य पर प्रभाव. सामाजिक और आर्थिक विकास पत्रिका, 22(3), 453 470. https://doi.org/10.1007/s40847-020-00121-y
19. कुमार, आर. (2019). पर्यावरणीय सुधार और स्वच्छ ऊर्जा कार्यक्रमः उज्ज्वला योजना का विश्लेषण. इंडियन जर्नल ऑफ एनवायरनमेंट, 14(3), 125 133.
20. मिश्रा, ए. (2020). ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार हेतु स्वच्छ ऊर्जा कार्यक्रम. स्वास्थ्य और समाज पत्रिका, 19(4), 301 315.
21. गुप्ता, ए. (2020). ग्रामीण क्षेत्रों में एलपीजी उपयोग और स्वास्थ्य सुधारः उज्ज्वला योजना का अध्ययन. स्वास्थ्य और समाज पत्रिका, 18(2), 112 125.
22. शर्मा, डी. (2018). पारंपरिक ईंधन और महिलाओं का स्वास्थ्यः एक तुलनात्मक अध्ययन. भारतीय जनस्वास्थ्य समीक्षा, 43(1), 55 67.
23. कुमार, आर. (2019). पर्यावरणीय सुधार और स्वच्छ ऊर्जा कार्यक्रमः उज्ज्वला योजना का विश्लेषण. इंडियन जर्नल ऑफ एनवायरनमेंट, 14(3), 125 133.
24. संह, आर. (2021). उज्ज्वला योजना और ग्रामीण महिलाओं का स्वास्थ्यः अनुभवजन्य विश्लेषण. सामाजिक परिवर्तन, 50(2), 233 248. https://doi.org/10.1177/0049085721992843
25. दुबे, पी. (2020). स्वच्छ ऊर्जा कार्यक्रम और महिला सशक्तिकरणः उज्ज्वला योजना का मूल्यांकन. ग्रामीण विकास जर्नल, 36(4), 377 389.
26. दास, एम. (2019). ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं पर उज्ज्वला योजना का प्रभाव. स्वास्थ्य नीति और प्रबंधन पत्रिका, 11(1), 33 45.
27. नारायण, वी. (2020). ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ ऊर्जा की पहुंच और स्वास्थ्य सुधार. भारतीय स्वास्थ्य अनुसंधान जर्नल, 147(5), 495 502.
28. शुक्ला, एन. (2019). ग्रामीण महिलाओं के श्रम विभाजन पर ऊर्जा पहुंच का प्रभाव. सामाजिक अध्ययन पत्रिका, 17(3), 201 215.
29. दुबे, पी. (2020). स्वच्छ ऊर्जा कार्यक्रम और महिला सशक्तिकरणः उज्ज्वला योजना का मूल्यांकन. ग्रामीण विकास जर्नल, 36(4), 377 389.
30. गुप्ता, ए. (2021). उज्ज्वला योजना और महिला सशक्तिकरणः एक अध्ययन. विकास नीति समीक्षा, 13(1), 77 89. https://doi.org/10.1177/0972262921992845
31. शर्मा, डी. (2018). पारंपरिक ईंधन और महिलाओं का स्वास्थ्यः एक तुलनात्मक अध्ययन. भारतीय जनस्वास्थ्य समीक्षा, 43(1), 55 67.
32. मिश्रा, ए. (2020). ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार हेतु स्वच्छ ऊर्जा कार्यक्रम. स्वास्थ्य और समाज पत्रिका, 19(4), 301 315.
33. त्रिपाठी, वी. (2021). प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना और ग्रामीण रोजगार सृजन. भारतीय आर्थिक विकास समीक्षा, 29(2), 142 156.
34. कुमार, आर. (2019). पर्यावरणीय सुधार और स्वच्छ ऊर्जा कार्यक्रमः उज्ज्वला योजना का विश्लेषण. इंडियन जर्नल ऑफ एनवायरनमेंट, 14(3), 125 133.

35. सिंह, एस. (2020). प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का ग्रामीण स्वास्थ्य पर प्रभाव. सामाजिक और आर्थिक विकास पत्रिका, 22(3), 453 470. https://doi.org/10.1007/s40847-020-00121-y
36. पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय. (2018). प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजनाः वार्षिक रिपोर्ट 2017द्18. भारत सरकार. http://petroleum.nic.in/reports/pmuy
37. साहू, ए., – कर, पी. (2020). स्वच्छ ऊर्जा और वनों का संरक्षणः उज्ज्वला योजना का विश्लेषण. पर्यावरण अध्ययन पत्रिका, 18(2), 101 115.
38. सिंह, आर., – सिंह, डी. (2019). स्वच्छ ऊर्जा का जलवायु परिवर्तन पर प्रभावः उज्ज्वला योजना के संदर्भ में अध्ययन. जलवायु और सतत विकास जर्नल, 7(1), 45 59. https://doi.org/10.1177/0973408219827412
39. मिश्रा, पी., – शर्मा, एल. (2021). ग्रामीण भारत में पर्यावरणीय सुधार हेतु उज्ज्वला योजना की भूमिका. इंडियन जर्नल ऑफ सस्टेनेबल डेवलपमेंट, 15(4), 233 247.